शब्दभेद

शब्द: दो या दो से अधिक अक्षरों की वह ध्वनि जिसको सुनकर किसी अर्थ का बोध हो उसे **'शब्द'** कहते हैं। शब्द के दो भेद होते है, विकारी व अविकारी।

विकारी: संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया को **'विकारी'** या **'सव्यय'** कहते हैं। इसमें लिंग, वचन, कारक और पुरुष के अनुसार परिवर्तन होते हैं।

विकारी या सव्यय:

1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया

अविकारी: क्रियाविशेषण अव्यय, संबंधसूचक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय और विस्मयादिबोधक अव्यय को **'अविकारी'** या **'अव्यय'** कहते हैं। अविकारी शब्दों में लिंग, वचन, कारक और पुरुष के अनुसार परिवर्तन नहीं होता।

अविकारी या अव्यय:

1. क्रियाविशेषण अव्यय
2. समुच्चयबोधक अव्यय
3. संबंधसूचक अव्यय
4. विस्मयादिबोधक अव्यय

विकारी

1. संज्ञा:

जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव का बोध हो, उसे **'संज्ञा'** कहते हैं।

जैसे : राम, पुस्तक, मुंबई, बचपन इत्यादि।

संज्ञा के भेद :

संज्ञा के निम्नलिखित भेद होते हैं :

अ. व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिस शब्द से किसी खास व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे **'व्यक्तिवाचक'** संज्ञा कहते हैं।

जैसे : गंगा, हिमालय, दिल्ली, ताजमहल आदि।

गंगा नदी **हिमालय** से निकलती है।

जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है।

ब. जातिवाचक संज्ञा : जिस शब्द से किसी खास जाति अथवा वर्ग का बोध हो, उसे **'जातिवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

जैसे : बालिका, मोर, घोड़ा, नगर, पुस्तक, महिला आदि।

हमारा **देश** महान है।

गाय दूध देती है।

फूलों का गुच्छा सुंदर है।

क. **भाववाचक संज्ञा :** जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के गुण, स्वभाव या धर्म का बोध हो, उसे **'भाववाचक संज्ञा'** कहते हैं।

जैसे : बचपन, सत्य, सुंदरता, बुढ़ापा आदि।

ताजमहल की **सुंदरता** निराली है।

हमें **मानवता** की उपासना करनी चाहिए।

ड. **द्रव्यवाचक संज्ञा :** जिन शब्दों से ठोस, द्रव, पदार्थ, धातु, अधातु का बोध हो, उन्हें **'द्रव्यवाचक संज्ञा'** कहते हैं।

जैसे : सोना, लोहा, पानी, ताँबा आदि।

इ. **समूहवाचक संज्ञा :** जो शब्द किसी समुदाय का बोध कराते हैं, वे **'समूहवाचक संज्ञा'** कहलाते हैं।

जैसे : सेना, सभा, झुण्ड, वर्ग, परिवार आदि।

2. सर्वनाम:

संज्ञा के स्थान पर उपयोग में आने वाले विकारी शब्दों को **'सर्वनाम'** कहते हैं। **जैसे** – मैं, तुम, वह, वे

प्रयोग : 1. राजन शांत लड़का है। **वह** मेरा मित्र है।

2. **मैं** कल जाऊँगा।

3. **तुम** खाना खा लो।

इन वाक्यों में वह, मैं और तुम शब्दों का **सर्वनाम** के रूप में प्रयोग हुआ है।

सर्वनाम के भेद :

सर्वनाम के निम्नलिखित भेद होते हैं :-

अ. पुरुषवाचक सर्वनाम : जिस व्यक्ति के विषय में बोला या लिखा जाता हो उसके बदले आनेवाले सर्वनाम को **'पुरुषवाचक सर्वनाम'** कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के प्रकार :

प्रथम पुरुष : (वक्ता) **मैं** और **हम** का प्रयोग करता है।

उदाहरण : **मैं** दिल्ली गया था।

मध्यम पुरुष : (श्रोता) **तू, तुम** या **आप** का प्रयोग होता है।

उदाहरण : मैं **तुमसे** कल मिलता हूँ।

अन्य पुरुष : दो व्यक्ति जब किसी तीसरे व्यक्ति के विषय में बात कर रहें हो।

उदाहरण : तुम यह किताब **उनको** दे देना।

तुम यह समाचार **उस** तक पहुँचा देना।

ब. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** : जिस वाक्य से यह ज्ञात हो कि कुछ पूछा जा रहा है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण :

1. इस पत्र में **क्या** लिखा है?
2. तुम **किसके** भाई हो?

क. **निजवाचक सर्वनाम** : जहाँ पर वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के साथ स्वयं को जोड़कर बात की जा रही हो उसे **'निजवाचक सर्वनाम'** कहते हैं।

उदाहरण :

1. वह **स्वयं** यह कार्य कर सकता है।
2. मैं **खुद** लड़ सकता हूँ।

उदाहरण :

1. **वह** मेरी बहन है।
2. **वे** अच्छे व्यक्ति हैं।

इ. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम :** जिस सर्वनाम शब्द से किसी भी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो उसे '**अनिश्चयवाचक सर्वनाम**' कहते हैं।

उदाहरण :

1. **कोई** मुधर गीत गा रहा है।
2. **किसी** ने मुझे आवाज़ दी।
3. मैं आपको **कुछ** देना चाहती हूँ।

ई. **संबंधवाचक सर्वनाम :** वाक्य में एक सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने के लिए दूसरे सर्वनाम का प्रयोग किया जाए उसे '**संबंधवाचक सर्वनाम**' कहते हैं।

उदाहरण :

1. **जो** लंबे व्यक्ति हैं, **वे** वकील हैं।
2. **जो** प्रथम आएगा, **वह** पुरस्कार पाएगा।

3. विशेषण :-

संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्दों को **'विशेषण'** कहते हैं।

जैसे : 1. वह **सफेद** रंग की कार है।

2. कोयल की **मीठी** आवाज़ सबको भाती है।

3. जंगल बहुत **घना** है।

विशेषण के प्रकार :

अ. गुणवाचक विशेषण : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण बताते हैं वे **'गुणवाचक विशेषण'** कहलाते हैं। झूठी, सच्ची, ऊँची, गुलाबी इत्यादि।

ब. परिमाणवाचक विशेषण :

जिन शब्दों से संज्ञा शब्दों का परिमाण या मात्रा ज्ञात होती है वे **'परिमाणवाचक विशेषण'** कहलाते है। **थोड़ा** दूध, **चार किलो** चावल आदि।

क. संख्यावाचक विशेषण : जिन विशेषण शब्दों में संख्या का बोध हो, वे **'संख्यावाचक विशेषण'** कहे जाते हैं। **तीन** बच्चे, **कुछ** छात्र इत्यादि।

ड. संकेतवाचक विशेषण : जो शब्द किसी संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, वे **'संकेतवाचक विशेषण'** कहे जाते हैं। वह हाथी, यह बालक आदि।

4. क्रिया :

जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे **'क्रिया'** कहते हैं।

क्रिया के भेद :

अ. सकर्मक क्रिया : जिन क्रियाओं के होने का आशय उनके कर्ता से जुड़कर कर्म पर आधारित होता है, उसे **'सकर्मक क्रिया'** कहते हैं।

जैसे : लेखक ने **कहानी** लिखी।

यहाँ पर कर्ता → लेखक है।

कर्म → कहानी है।

सकर्मक क्रिया → लिखी या लिखना है।

ब. अकर्मक क्रिया : जिन क्रियाओं का आशय कर्ता से जुड़ा होता है, उसे **'अकर्मक क्रिया'** कहते हैं।

जैसे : शिक्षक **पढ़ाता है**। (**क्रिया** → पढ़ाना एवं **कर्ता** → शिक्षक)

1. मदन **आया।**
2. कमल **खेलता है।**

अविकारी

1. **क्रियाविशेषण अव्यय :**

जो अव्यय क्रियाओं की विशेषता बताते हैं, उन्हें **'क्रियाविशेषण अव्यय'** कहते हैं। यह 'विशेषता' स्थान, काल, रीति, परिमाण आदि से संबंधित होती है। जैसे – आज, तुरंत, कभी-कभी, जल्दी, सर्वत्र, वहाँ, उधर, जैसे-तैसे, चुपचाप, धीरे-धीरे, इत्यादि शब्दों से क्रियाविशेषण अव्यय की पहचान की जा सकती है।

उदाहरण : **वहाँ** कोई नहीं था।

बहन **कल** आएगी।

गाड़ी **धीरे-धीरे** चलती है।

पिता जी ने उसे **बहुत** समझाया।

2. **समुच्चयबोधक अव्यय :**

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य से, एक शब्द-समूह को दूसरे शब्द-समूह से या एक शब्द को दूसरे शब्द से जोड़ते हैं, उन्हें **'समुच्चयबोधक अव्यय'** कहते हैं। जैसे – या, नहीं तो, वरना, किंतु, परंतु, कि, लेकिन, इसलिए, अर्थात, ताकि, क्योंकि, तथापि, यदि इत्यादि इन शब्दों से समुच्चयबोधक अव्यय की पहचान की जा सकती है।

उदाहरण : सूरज निकला **लेकिन** प्रकाश नहीं फैला।
लड़कों ने देखा **कि** अध्यापक आ रहे हैं।
राम **और** कृष्ण एक ही मकान में रहते हैं।

3. **संबंधसूचक अव्यय :**

जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उस संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ निर्धारित करते हैं, उन्हें **'संबंधसूचक अव्यय'** कहते हैं। जैसे – पास, सामने, ओर, के आगे, के पीछे, साथ इत्यादि शब्दों से संबंधसूचक अव्यय की पहचान की जा सकती है।

उदाहरण : भालू बच्चों **के साथ** रहने लगा।
मैं शेर की **ओर** बढ़ा।
तुम्हारी **खातिर** मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ।
लड़के **के पीछे** कुत्ता भी आया।

4. **विस्मयादिबोधक अव्यय :**

जिन अव्ययों का संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता परंतु जो अव्यय केवल वक्ता के आनंद, भय, हर्ष, शोक, तिरस्कार, घृणा, स्वीकार, संबोधन और अनुमोदन आदि भाव सूचित करते हैं, उन्हें **'विस्मयादिबोधक अव्यय'** कहते हैं।

उदाहरण : **वाह !** कितना सुंदर है ताजमहल।
अरे ! संकटमोचन जी, आप यहाँ?
हाय ! बेचारा रामू अनाथ हो गया।
छि: ! ऐसी गंदगी।

स्वाध्याय

प्र.1. निम्नलिखित शब्दों में अव्यय पहचानकर लिखिए:

1. कहो, **कहाँ** चले?
2. कोलंबस आँखें बंद कर लेता **और** मन में जहाज बनाता।
3. **वाह वाह !** घबरा गए?
4. **उधर** उस मुर्गे के भी बाल-बच्चे होंगे।
5. **कहो** ! मिस्टर शेखचिल्ली !
6. युवक ने **धीरे-से** उत्तर दिया।
7. यह था तो कोलंबस का स्वप्न **परंतु** उसने इस स्वप्न को सच कर दिखाया।

उत्तर: 1. कहाँ – क्रियाविशेषण अव्यय
2. और – समुच्चयबोधक अव्यय
3. वाह वाह ! – विस्मयादिबोधक अव्यय
4. उधर – क्रियाविशेषण अव्यय
5. कहो ! – विस्मयादिबोधक अव्यय
6. धीरे-से – क्रियाविशेषण अव्यय
7. परंतु – समुच्चयबोधक अव्यय

प्र.2. निम्नलिखित अव्ययों का वाक्य में प्रयोग कीजिए:

1.	फौरन	2.	पीछे
3.	समान	4.	अब
5.	भी	6.	बल्कि
7.	इसलिए	8.	अरे
9.	हे भगवान !	10.	चुपचाप

उत्तर: 1. रानी को **फौरन** बुलाइए।

2. गाड़ी के **पीछे** कुत्ता खड़ा था।

3. माँ का हृदय सागर के **समान** होता है।

4. सारी मुश्किलें **अब** खत्म हो गईं।

5. प्रयत्न करने पर **भी** हमारी ट्रेन छूट गई।

6. हमें ईश्वर की आराधना कुछ पाने के लिए नहीं **बल्कि** मन को संबल देने के लिए करनी चाहिए।

7. भूख लगी थी **इसलिए** खाना जल्दी खा लिया।

8. **अरे** ! क्या बकवास कर रहे हो, चुप हो जाओ।

9. **हे भगवान** ! लोग इतने बेबस कैसे हो जाते है?

10. श्रोता **चुपचाप** सुन रहे है।